Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 9th August 2019, Revised on 14th August 2019; Accepted 19th August 2019

आलेख

शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका

* नेहा शर्मा, *शोधार्थी*
डॉ. निशा शर्मा, *सहायक आचार्य*
महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर
मोबाईल – 9782211887

मुख्य शब्द . *नवाचार,शिक्षक शिक्षा, बहुमुखी और सर्वांगीण विकास आदि।*

सारांश

नवाचार एक नया विचार, एक नया व्यवहार है अर्थात् शिक्षा को सरल, उपयोगी, व्यावहारिक, रूचिकर, रचनात्मक, क्रियात्मक एवं प्रासंगिक बनाना नवाचार है। आधुनिक युग में बच्चों के बहुमुखी और सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा पद्धति में नवाचार की आवश्यकता है तभी बच्चों में सकारात्मक विकास, नैतिक मूल्यों का एवं आदर्शों का विकास संभव है। शिक्षा पद्धति में नवाचार शिक्षकों पर निर्भर करता है। शिक्षक नवाचार के द्वारा नवीन शिक्षण विधियों एवं पढ़ाने के तीरके में परिवर्तन करके बच्चों को उनके कौशल एवं प्रतिभा से अवगत करा सकते हैं। शिक्षक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग द्वारा परम्परागत शिक्षा पद्धति को वर्तमान परिवेश के अनुरूप परिवर्तित किया जा सकता है।

प्रस्तावना

नवाचार दो शब्दों से मिलकर बना है नव और आचार। नव का अर्थ नया अथवा नवीन से है और आचार का आशय परिवर्तन से है। इस प्रकार नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व में प्रचलित विधियों एवं पदार्थों इत्यादि में नवीनता का संचार करे। नवाचार के अंतर्गत कुछ नया और उपयोगी अपनाया जाता है। प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सशकत माध्यम होने के साथ–साथ राष्ट्र और विश्व के आर्थिक विकास की धुरी भी है। बच्चे राष्ट्र के निर्माण के प्रमुख आधार तत्व है और उनको परिवार, समाज व राष्ट्र का एक जिम्मेदार नागरिक बनाने वाला शिक्षक इसका महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षक जितना अधिक क्रियाशील, प्रभावपूर्ण, साधन सम्पन्न, प्रतिबद्ध और दक्ष होगा शिक्षा उतनी ही प्रभावी एवं उपयोगी होगी। इसी को ध्यान में रखते हुए तथा यशपाल समिति की सिफारिशों के आधार पर शिक्षकों के नवाचार को प्राथमिकता दी गयी है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार का प्रयोग वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए किया गया है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार

हमारे देश में शैक्षिक मानकों के उत्थान और सतत् विकास के लिए शिक्षक प्रणाली का पुनरोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण एक शक्तिशाली माध्यम है। कई ऐसे मुद्दे हैं जिनके लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार के लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रतिस्पर्धा एवं विकास की परिस्थिति में एक राष्ट्र को विकास के लिए शिक्षण, एकीकृत शिक्षण, शिक्षण पाठ्यक्रम और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में अभिनव परिवर्तन की आवश्यकता है। शिक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु सर्वप्रथम शिक्षकों को नवीन ज्ञान, कौशलों, दक्षताओं, शिक्षण विधियों, तकनीकों, अनुसंधान व नवाचार के ज्ञान एवं इनके व्यावहारिक प्रयोग में पारंगत होना आवश्यक है। नवीन शैक्षिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों के साथ संबंध बनाने के लिए शिक्षकों को स्वयं को नए तरीकों से अवगत होने की आवश्यकता है। आज वीडियों, इंटरनेट, ब्रॉडकास्ट का समय है। बच्चे इस इंटरेक्टिव मीडिया के माध्यम से आसानी से सीख सकते हैं। इसलिए शिक्षकों को वर्तमान प्रौद्योगिकी के साथ अपने आपको निरन्तर बनाये रखना होगा। सीखना अनवरत है और इसमें निरन्तर विकास होता रहता है। एक योग्य शिक्षक स्वयं की खोज द्वारा पाठ्यक्रम को रोचक एवं बोधगम्य बनाता है। शिक्षक शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अधिगमकर्त्ता को ऐसे निर्देश देना है जिससे वे सूचनाओं को प्राप्त कर स्वयं ज्ञानार्जन की अनुभूति कर अपने आवश्यक कार्यों के अनुरूप उपयोग में ला सकें। शिक्षक शिक्षा में नवाचार को अपनाकर न केवल पाठ्यक्रम की पूर्ति की जा

रही है अपितु भविष्य की संभावनाओं तथा प्रतिस्पर्द्धा में सफलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षक नवाचार द्वारा ऐसी प्रभावपूर्ण अधिगम परिस्थिति का निर्माण व प्रयोग करते हैं जिसमें करके सीखने एवं अभ्यास द्वारा सीखने और प्रत्यक्ष अनुभवों को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हो।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार लाने के उद्देश्य से ही वर्तमान में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में ''राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् विनियम–2014'' के द्वारा कुछ प्रभावशाली परिवर्तन किए गए है जैसे– द्विवर्षीय शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षा में स्नातक (बी.एड.) शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम.एड.), शारीरिक शिक्षा स्नातक (बीपी.एड), शारीरिक शिक्षा में (एम.पी.एड.) तथा तीन वर्षीय एकीकृत बी. एड–एम.एड, चार वर्षीय एकीकृत बी.ए–बी.एड, बी.एससी–बी.एड. एवं बी.एल.एड पाठ्यक्रम आदि। नवाचारों के रूप में सूक्ष्म शिक्षण, विभिन्न शिक्षण कौशल, वनशाला कार्यक्रम, सामुदायिक सेवाएँ, खण्ड शिक्षण, स्वाध्याय पर आधारित अभ्यास कार्यक्रम आदि को सम्मिलित किया गया है। सैद्धान्तिक भाग के साथ–साथ नवीन पाठ्यक्रम में भाषा का ज्ञान, विषय–वस्तु के अध्ययन तथा प्रत्यावर्तन के साथ ड्रामा एवं कला जैसी नवीनतम क्रियाओं का अध्ययन व संचालन नवाचार ही है। क्षेत्रीय कार्यक्रम के निर्धारित पाठ्यक्रम में शिक्षण शैली, अधिगम का मूल्यांकन, कम्प्यूटर शिक्षा, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, पैनल चर्चा, योग शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी क्रियाएँ आदि को सम्मिलित किया गया है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग के द्वारा लाभान्वित वर्ग को क्या सीखना, कैसे सीखना, कब सीखना तथा क्यों सीखना के साथ–साथ सीखने की उपलब्धियों का पता लगाने के लिए मूल्यांकन के नवीन उपकरणों की जानकारी दी जाती है। एक नवाचारी शिक्षक शिक्षण संबंधी समस्याओं का समाधान स्वयं के स्तर पर करने के साथ ही दूसरे शिक्षकों को ऐसे समाधान द्वारा प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। शिक्षक शिक्षा की वास्तविकता एवं व्यावहारिक उपादेयता, इनके क्रियान्वयन की सफलता नवाचारों की खोज से ही संभव है। नवाचार से मानसिक मंथन विकसित होता है। नवाचारों के प्रयोग से कक्षा–कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण एवं अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय रखने का अवसर प्रदान किया जाता है। जिससे अधिगम की स्थिति ज्ञान स्तर से उठ कर चिन्तन स्तर तक पहुँच जाती है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार का उपयोग अनेक शैक्षिक समस्याओं का हल प्राप्त करने में उपयोगी है। शिक्षक नवाचार द्वारा कक्षा के समस्त विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत रूप से प्रयोग करके शिक्षण में रूचि व बोधगम्यता को बनाये रखने में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता

शिक्षक समाज का वो हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है। विद्यालय और शिक्षक दोनों ही अपने परिवेश से प्रभाव ग्रहण करते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण एवं स्कूली शिक्षा का गहन संबंध है। ये दोनों ही एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है। एक शिक्षक शिक्षा के वृहत्तर संदर्भों में कार्य करता है जैसे– उद्देश्य, पाठ्यक्रम, पाठ्य–सामग्री, विधियाँ आदि। शिक्षक शिक्षा को स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम, आवश्यकता एवं अपेक्षताओं के साथ जोड़कर देखा जाना आवश्यक है। शिक्षक को केवल शिक्षण विधियों का ज्ञात ही नहीं बल्कि बच्चों को, उनके सामाजिक–आर्थिक परिवेश को तथा सीखने की प्रक्रिया को समझना चाहिए। छब्थ्ज्.2009 ने भी शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन एवं गुणवत्ता में विकास के लिए शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता महसूस की है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता को निम्न संदर्भों में देखा जा सकता है–

1. शिक्षक शिक्षा को समय सापेक्ष परिवर्तन युक्त बनाने के लिए।
2. शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए।
3. शिक्षक शिक्षा को तकनीकी युक्त बनाने के लिए।
4. अभिव्यक्ति क्षमता एवं शिक्षण दक्षता के विकास हेतु।
5. छात्राध्यापकों को प्रत्यक्ष एवं स्थायी ज्ञान प्रदान करने योग्य बनाने हेतु।
6. छात्राध्यापकों को क्रियाशील बनाने के लिए।
7. छात्राध्यापकों में स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए।
8. शिक्षक शिक्षा संस्थानों एवं विद्यालय में समन्वय स्थापित करने के लिए।
9. शिक्षण विधियों में नवीनता लाने हेतु।
10. सामाजिक आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु।

11. वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के प्रसार हेतु।
12. शिक्षा के उद्देश्य, उसकी पाठ्यचर्या में नूतन विषय सामग्री के विकास के लिए।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार का महत्त्व

1. नवाचार द्वारा शिक्षक बच्चों को बोझिल, उबाऊ और अरूचिकर शिक्षण से हटाकर आनंदमयी एवं रूचिकर शिक्षा देने में सक्षम होते हैं।
2. यह शिक्षक को अपने काम के प्रति रचनात्मक, जिम्मेदार, ठोस एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने में सहयोग करता है।
3. नवाचार के माध्यम से शिक्षक परम्परागत शैक्षिक जड़ता को तोड़ते हुए नवीन दक्षताओं को विकसित कर सकता है।
4. नवाचार के द्वारा शिक्षक स्वयं सृजनशील एवं अध्ययनशील बनते हैं।
5. नवाचार से शिक्षक का शैक्षिक पुररूत्थान होता है।
6. छात्राध्यापक शिक्षण में प्रायोगिक एवं व्यावहारिक कार्यों को संपादित करने हेतु आवश्यक तैयारी एवं प्रभावी क्रियान्वयन सकर सकते हैं।
7. नवाचार के माध्यम से विद्यालय एवं समुदाय के मौजूदा संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं।
8. छात्राध्यापक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।
9. नवाचार के द्वारा ही शिक्षणोत्तर गतिविधियों का आयोजन संभव है।
10. नवाचार से छात्राध्यापक बाल केन्द्रित उपागम एवं गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सीख सकते हैं।

निहितार्थ

नवाचार शैक्षिक व्यवस्था और कार्यप्रणाली को जीवन्त बनाये रखने के लिए आवश्यक है। इसके अभाव में शैक्षिक लक्ष्यों और प्रक्रिया में व्यापक अंतर हो सकता है। इनका प्रयोग वर्तमान के साथ ही भविष्य की अपेक्षाओं की भी पूर्ति करने में सहायक है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार द्वारा छात्राध्यापक सामुदायिक सहभागिता, अभिनव शिक्षण, तकनीकी, खेल–खेल में शिक्षा, सरल अंग्रेजी अधिगम, बाल संसद, कला शिल्प से सर्वांगीण विकास, कॉन्सेप्ट मैपिंग, चित्रकथा के माध्यम से शिक्षा आदि का प्रयोग अपने भावी जीवन में कर पायेंगे। नवाचार से शिक्षण में गुणात्मक उन्नयन होता है, शिक्षा को दिशाबोध प्राप्त होता है जिससे व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षक–शिक्षा में नवाचार की महत्ता स्वीकार की जाती है।

संदर्भ

1. मिशेल, जे.एम. (2003). इमर्जिंग फ्यूचर्स : इनोवेशन इन टीचिंग एण्ड लर्निंग वी.ई.टी.ए.एन.टी.ए. मेलबार्न।
2- www.srsshodhsansthan.org
3. कुमार, डॉ. अमित (2015). भारतीय शिक्षक शिक्षा में अभिनव दृष्टिकोण : Vol. (5) ISSN-2277-1255
4- Innovative Practise in Teacher Education : Dr. Saroj Agarwal, Research Poedia, Vol. (3) No. 1 ISSN 2347-9000
5. पटेल, माधव (2018). शिक्षा में नवाचार : Teacher of India.

*** Corresponding Author:**
नेहा शर्मा, *शोधार्थी एवं* **डॉ. निशा शर्मा,** *सहायक आचार्य*
महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर
मोबाईल – 9782211887